==========

AVYAKT MURLI

14 / 02 / 78

==========

14-02-78 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

समीप आत्मा की निशानियाँ

अव्यक्त बापदादा बोले: -

स्वयं को सदा बाप-दादा के साथ अर्थात् सदा समीप अनुभव करते हो? समीप आत्मा की निशानी क्या होगी? जितना जो समीप होगा उतना स्थिति में, कर्त्तव्य में, गुणों में बाप समान अर्थात् सदा सम्पन्न, अर्थात् दाता होगा। जैसे बाप हर सेकेण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है वैसे बाप समान विश्व कल्याणकारी होगा। विश्व कल्याणकारी का हर संकल्प हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना वाला होगा। एक भी संकल्प शुभ भावना के सिवाए नहीं होगा। जैसे बीज फल से भरपूर होता है अर्थात् सारे वृक्ष का सार बीज में भरा हुआ होता है। ऐसे संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, सर्व को बाप समान बनाने की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दु:खी अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी,शान्त बनाने की भावना, यह सर्व रस या सार हर संकल्प में भरा हुआ होगा। कोई भी संकल्प रूपी

बीज इस सार से खाली अर्थात् व्यर्थ नहीं होगा। कल्याण की भावना से समर्थ होगा।

जैसे स्थूल साज़ आत्माओं को अल्प काल के लिए उल्लास में लाते हैं। न चाहते हुए भी सबके पाँव नाचने लगते हैं ना, मन नाचने लगता है, वैसे विश्व कल्याणकारी का हर बोल रूहानी साज़ के समान उत्साह और उमंग दिलाता है। उदास आत्मा बाप से मिलन मनाने का अनुभव करती और खुशी में नाचने लग पड़ती। विश्व कल्याणकारी का कर्म, कर्मयोगी होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं,ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य होता है। ऐसी आत्मा को कहा जाता है बाप समान समीप आत्मा। ऐसे विश्व कल्याणकारी आत्मा का हर सेकेण्ड का सम्पर्क आत्मा को सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव कराता है। कोई आत्मा को शक्ति का, कोई को शान्ति का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन से अधिकारी बनने का, उदास से हर्षित होने का, इसी प्रकार विश्व-कल्याणकारी महान् आत्मा का सम्पर्क सदा उमंग और उत्साह दिलाता है। परिवर्तन का अनुभव कराता है, छत्रछाया का अनुभव कराता है। ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् समीप आत्मा बनने वाले ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है। ऐसे बन रहे हो ना?

लकी तो सभी हो जो बाप ने अपना बना दिया। बाप ने बच्चों को स्वीकार किया अर्थात् अधिकारी बनाया। यह अधिकार तो सबको मिल ही गया। लेकिन विश्व का मालिक बनने का अधिकार, विश्व-कल्याणकारी बनने के आधार से होगा। अब हरेक अपने आपसे पूछो अधिकारी बने हैं? राज्य-भाग के अधिकारी बने हैं। तख्तनशीन बनने के अधिकारी बने हैं या रॉयल फैमिली में आने के अधिकारी बने हैं? या रॉयल फॅमिली के सम्पर्क में आने के अधिकारी बने हैं। कहाँ तक पहुँचे हैं? राज्य-भाग्य के अधिकारी बने हैं?

विदेशी आत्माएँ अपने को क्या समझती हैं। सब राज्य करेंगे या राज्य में आयेंगे? क्या जो मिलेगा वह मंजूर है? विदेशी आत्माओं में से सतयुग की 8 बादशाही में तख्तनशीन बनने के उम्मीदवार कौन समझता है? 8 बादशाही में से लक्ष्मी नारायण की फर्स्ट, सेकेण्ड उसमें आयेंगे। 8 बादशाही में आने के लिए क्या करना पड़ेगा? या यह सोचा है कि सिर्फ 8 ही हैं। बहुत सिम्पल बात है, यह देखो कि हर समय हर परिस्थिति में अष्ट शक्तियां साथ-साथ इमर्ज रूप में होती हैं? अगर दो-चार शक्तियां हैं और एक भी शक्ति कम है तो अष्ट बादशाहियों में नहीं आ सकते। अष्ट शक्तियों की समानता हो और एक ही समय अष्ट ही शक्तियां इमर्ज चाहिए। ऐसे भी नहीं कि सहन शक्ति 100% लेकिन निर्णय शक्ति 60% या 50% है। दोनों में समानता चाहिए अर्थात् परसेन्टेज फुल चाहिए। तब ही सम्पूर्ण राज्य गद्दी के अधिकारी होंगे। अब बताओ क्या बनेंगे? अष्ट लक्ष्मी नारायण के राज्य या तख्त के अधिकारी होंगे।

विदेशी आत्माओं में उमंग और हिम्मत अच्छी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। हाईजम्प का सैम्पल बन सकते हैं। लेकिन यह सब बातें ध्यान में रखनी पड़ेंगी। विशेष आत्माएँ हो तब तो बाप-दादा भी जानते हैं, रेस में नम्बर वन दौड़ लगाने वाले ऐसे उमंग उत्साह वाले दूर रहते भी समीप अनुभव करने वाले, ऐसी आत्मायें भी हैं ज़रूर। अब स्टेज पर प्रेक्टीकल में अपना पार्ट बजाओ? पुरूषार्थ को आगे बढ़ाना है और फर्स्ट नम्बर की विशेषता क्या है उसी प्रमाण अपना पुरूषार्थ करना है, हर कर्म में चढ़ती कला हो। अच्छा

अफ्रीका पार्टी प्रति

सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं। जैसे कई बातों में प्लान बहुत बनाते हैं, प्रैक्टीकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लान बनाएगा वही प्रैक्टीकल होगा। तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हो ना? पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियां तो आपके तरफ बहुत आती हैं, लेकिन जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भ् स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं। जैसे पानी नीचे होता है, कमल ऊपर रहता है, इसी प्रकार परिस्थिति नीचे है, हम ऊपर हैं, नीचे की बात नीचे। कभी कोई बात आवे

तो सोचो बाप-दादा हमारे साथ है। आलमाइटी अथॉरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहां रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहां तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है ना, स्वप्न की जो बातें होती वह उठने के बाद समाप्त हो जाती, तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता लेकिन है कुछ नहीं। तो ऐसे निश्चय बुद्धि हो? हरेक के मस्तक के ऊपर विक्टरी का तिलक लगा हुआ है तो ऐसी आत्माएँ जो हैं ही विजय के तिलक वाले, उनकी हार हो नहीं सकती। मेहनत करके आये हो, परिस्थिति पार करके आये हो इसलिए बाप दादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है जैसे स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहां कोई कहां जाकर पड़ते हैं, यह भी द्वापर में सब बिछुड़ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा।

महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ माया प्रुफ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। ड्रेस तो सदा साथ रहती है ना माया प्रूफ की। प्लेन में भी देखो इमरजेंसी में ड्रेस देते हैं कि कुछ हो तो पहन लेना। तो आपको बहुत सहज साधन मिला है।

एक-एक रतन वैल्युएबल है क्योंकि अगर वैल्युएबल रतन नहीं होते तो कोटो में कोई आप ही कैसे आते। जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है उसने मुझे अपना लिया। एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है, आप तो बच्चे बन गये तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए, सदा मन खुशी में नाचता रहे। वर्तमान समय की खुशी का नाचना भविष्य चित्र में भी दिखाते हैं। कृष्ण को सदैव डान्स के पोज़ में दिखाते हैं ना।

जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं। अच्छा-जो नहीं पहुँच सके हैं उन्हों को भी बहुत-बहुत याद देना। बापदादा का स्नेह अवश्य समीप लाता है। अमृतवेले उठ बाप से रूह रूहान करो तो सब परिस्थतियों का हल स्पष्ट दिखाई देगा। कोई भी बात हो उसका रेस्पॉन्स रूह रूहान में मिल जायेगा। मधुबन वरदान भूमि से विशेष यह वरदान लेकर जाना तो और भी लिफ्ट मिल जायेगी। जब बाप बैठे हैं बोझ उठाने के लिए तो खुद क्यों उठाते। जितना हल्का होंगे उतना ऊपर उड़ेंगे। अनुभव करेंगे कि कैसे हल्के बनने से ऊँची स्टेज हो जाती है।

बाप को जान लिया, पा लिया इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना बच्चे उठो, देश कोई भी हो लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो, चाहे देश से दूर हैं लेकिन बाप के साथ रहने वाले नजदीक से नज़दीक हैं। कुमारियां निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। ड्रामा में यह भी एक लिफ्ट है। इस लिफ्ट का लाभ लेना चाहिए। जितना-जितना अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जायेंगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियां बाप को अति प्रिय हैं क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियां हैं। तो बाप समान हो गई ना। अच्छा।

कुछ अन्य पार्टियों से बातचीत

ग्याना पार्टी

बाप-दादा तो हर एक को दिलतख्तनशीन देखते हैं। जैसे कोई बहुत प्रिय बच्चे होते हैं या सिकीलधे लाडले होते जो उनको कभी नीचे धरनी या मिट्टी पर पांव नहीं रखने देते। तो बाप-दादा भी लाडले बच्चों को दिल तख्त के नीचे उतरने नहीं देते वहाँ ही विराजमान रखते। इससे श्रेष्ठ स्थान और कोई है? तो सदा वहाँ ही रहते हो ना? नीचे तो नहीं आते हो? जब और कोई स्थान है ही नहीं तो बुद्धि रूपी पांव और कहाँ टिक सकते हैं? याद अर्थात् दिलतख्तनशीन। बाप-दादा को जो निरन्तर योगी बच्चे हैं वह सदा साथ रहते हुए नज़र आते हैं। सहजयोगी हो ना। मुश्किल तो नहीं

लगता? कोई भी परिस्थिति जो भल हलचल वाली हो लेकिन बाबा कहा और अचल। तो बाबा कहने में कितना टाइम लगता है। परिस्थिति के संकल्प में चले जाते हैं तो जितना समय परिस्थिति का संकल्प रहता उतना समय मुश्किल लगता। अगर कारण के बजाए निवारण में चले जाओ तो कारण ही निवारण बन जाये। ब्राह्मणों के आगे कोई परिस्थिति होती नहीं-क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान् हैं। उनके आगे यह परिस्थितियां चींटी समान भी नहीं। सिर्फ होता क्या है? जब कोई ऐसी बातें आती हैं तो उस समय उस कारण में समय लगा देते हैं। क्यों हुआ? क्या हुआ? उसके बजाए यह सोचें जो हुआ उसमें कल्याण भरा हुआ है, सेवा समाई हुई है तो चेन्ज हो जायेगा। भल रूप सरकम्सटान्सेज़ का हो लेकिन समाई सर्विस है ऐसा सोचने से और इस रूप से देखने से सदा अचल रहेंगे। तो अभी मधुबन से क्या परिवर्तन करके जायेंगे? सदा कम्पलीट, कम्पलेन नहीं। अब तक जो रिज़ल्ट है उसका प्रमाण अच्छा है। अब चारों ओर आवाज़ फैलाने का बहुत जल्दी प्रयत्न करो क्योंकि अभी समय है फिर इच्छा होगी लेकिन सरकमस्टांसेज़ ऐसे होंगे कि कर नहीं सकेंग। इसलिए जितना जल्दी हो सके चक्रवर्ती बन सन्देश देते जाओ, बीज बोते जाओ। लकी हो जो ड्रामा अनुसार अपने जीवन से, वाणी से, कर्म से सर्व रीति से सेवा करने के निमित्त हो और आगे भी बन सकते हो। हर कर्म में सबको ज्ञान का स्वरूप दिखाई दे-यही विशेष लक्ष्य रखो क्योंकि कर्म आटोमेटिक (स्वतः) सबका अटेन्शन खिंचवाते हैं। प्रैक्टिकल कर्म एक बोर्ड का काम

करता है। कर्म देखते ही सबका अटेन्शन जाता है कि ऐसे कर्म सिखलाने वाला कौन। तो अभी नवीनता क्या करेंगे? लाइट हाउस बनेंगे? एक स्थान पर रहते भी चारों ओर लाइट फैलायें जो कोई भी उल्हना न दे कि इतना नज़दीक लाइट हाउस थे और फिर भी हमको लाइट नहीं मिली। अच्छा।

जर्मनी

बाप-दादा को क्वालिटी पसन्द आती है। क्वालिटी अच्छी है तो क्वान्टिटी बन ही जायेगी। मेहनत करते चलो सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार है। जर्मन की धरनी द्वारा भी कोई विशेष कर्म ज़रूर होना है। जर्मन की धरती में ऐसे विशेष व्यक्ति हैं जो एक भी बहुत नाम बाला कर सकता है, छिपे हुए रतन हैं जर्मनी में। चारों ओर आवाज़ फैलाओ तो निकल आयेंगे। अभी भी अच्छी मेहनत की है और भी चारों ओर फैलाओ। यही लक्ष्य रखो अगले वर्ष ग्रुप बनाकर लाना है वारिस क्वालिटी। लक्ष्य से सफलता हो ही जायेगी। अच्छा। और सब संकल्प छोड़ एक संकल्प में रहो मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो सफलता ही सफलता है। संकल्प किया और सफलता मिली। इसलिए ज्यादा नहीं सोचो। प्लान बनाओ लेकिन कमल फूल समान हल्का रहो। सोचा, किया और समाप्त। जितना एक संकल्प में रहेंगे उतनी टचिंग अच्छी होती रहेगी। ज्यादा संकल्प में रहने से जो ओरीजिनल बाप की मदद है वह मिक्सअप हो जाती है। इसलिए एक ही संकल्प कि मैं बाबा की, बाबा मेरा। मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त होगी। चक्रवर्ती बनो

तो बहुत अच्छा गुलदस्ता तैयार हो जायेगा। क्वान्टिटी भल न हो लेकिन जर्मन की धरनी से एक भी निकल आया तो नाम बाला हो जायेगा। अच्छा।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- बाप के समीप आत्मा की बाबा ने क्या निशानियां बताई हैं?

प्रश्न 2 :- संकल्प रूपी बीज में क्या भरा होना चाहिए?

प्रश्न 3 :- सफलता प्राप्त करने के लिए बाबा ने क्या राय दी है?

प्रश्न 4 :- सम्पूर्ण राज गद्दी के अधिकारी कब हो सकते हैं?

प्रश्न 5 :- बाबा ने तीव्र पुरूषार्थी किसे कहा है?

FILL IN THE BLANKS:-

(कर्मयोगी, स्वस्थिति, परिवर्तन, बिछुड़, उत्साह, उमंग, इकट्ठे, नथिंग-न्यू, कमल)

1 विश्व कल्याणकारी का हर बोल रूहानी साज़ के समान ____ और ____ दिलाता है।

2 विश्व कल्याणकारी का कर्म, ____ होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है।

3 जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति ____ के आधार पर ____ हो जाती है।

4 ____ ऐसा अनुभव करने वाले सदा ____ पुष्प के समान रहते हैं।

5 सब ____ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को ____ कर रहे हैं।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् प्रिय आत्मा बनने वाले ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है।

2 :- क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ माया प्रुफ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए।

3 :- जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई शक्तिशाली नहीं।

4 :- मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से खुशी अवश्य प्राप्त होगी।

5:- प्रैक्टिकल कर्म एक बोर्ड का काम करता है।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- बाप के समीप आत्मा की बाबा ने क्या निशानियां बताई हैं?

उत्तर 1 :- बाबा ने निशानियां बताई हैं कि :-

❶ जितना जो समीप होगा उतना स्थिति में, कर्त्तव्य में, गुणों में बाप समान अर्थात् सदा सम्पन्न, अर्थात् दाता होगा।

❷ जैसे बाप हर सेकेण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है वैसे बाप समान विश्व कल्याणकारी होगा।

❸ विश्व कल्याणकारी का हर संकल्प हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना) वाला होगा।

प्रश्न 2 :- संकल्प रूपी बीज में क्या भरा होना चाहिए?

उत्तर 2 :- इसके लिये बाबा ने कहा है कि :-

ऐसे संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, सर्व को बाप समान बनाने की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दु:खी अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी,शान्त बनाने की भावना, यह सर्व रस या सार हर संकल्प में भरा हुआ होगा।

प्रश्न 3 :- सफलता प्राप्त करने के लिए बाबा ने क्या राय दी है?

उत्तर 3 :- बाबा ने राय दी है कि :-

❶ लक्ष्य से सफलता हो ही जायेगी। अच्छा।

❷ और सब संकल्प छोड़ एक संकल्प में रहो मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो सफलता ही सफलता है।

❸ संकल्प किया और सफलता मिली।

प्रश्न 4 :- सम्पूर्ण राज गद्दी के अधिकारी कब हो सकते हैं?

उत्तर :- सम्पूर्ण राज गद्दी के अधिकारी तब होंग जब:-

❶ अष्ट शक्तियों की समानता हो और एक ही समय अष्ट ही शक्तियां इमर्ज चाहिए।

❷ ऐसे भी नहीं कि सहन शक्ति 100% लेकिन निर्णय शक्ति 60% या 50% है।

❸ दोनों में समानता चाहिए अर्थात् परसेन्टेज फुल चाहिए। तब ही सम्पूर्ण राज्य गद्दी के अधिकारी होंगे।

प्रश्न 5 :- बाबा ने तीव्र पुरूषार्थी किसे कहा है?

उत्तर 5 :- बाबा ने तीव्र पुरूषार्थी के लिए बताया है कि :-

❶ तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं।

❷ जैसे कई बातों में प्लान बहुत बनाते हैं, प्रैक्टीकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लान बनाएगा वही प्रैक्टीकल होगा।

FILL IN THE BLANKS:-

(कर्मयोगी, स्वस्थिति, परिवर्तन, बिछुड़, उत्साह, उमंग, इकट्ठे, नथिंग-न्यू, कमल)

1 विश्व कल्याणकारी का हर बोल रूहानी साज़ के समान ____ और ____ दिलाता है।

उत्साह / उमंग

2 विश्व कल्याणकारी का कर्म, ____ होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है।

कर्मयोगी

3 जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति ____ के आधार पर ____ हो जाती है।

स्वस्थिति / परिवर्तन

4 ____ ऐसा अनुभव करने वाले सदा ____ पुष्प के समान रहते हैं।

नथिंग-न्यू / कमल

5 सब ____ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को ____ कर रहे हैं।

बिछुड़ / इकट्ठे

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✖】 【✔】

1 :- ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् प्रिय आत्मा बनने वाले ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है। 【✖】

ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् समीप आत्मा बनने वाले ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है।

2 :- क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ माया प्रुफ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। 【✔】

3 :- जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई शक्तिशाली नहीं। 【✖】

जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं।

4 :- मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से खुशी अवश्य प्राप्त होगी। 【✖】

मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

5 :- प्रैक्टिकल कर्म एक बोर्ड का काम करता है। 【✔】